रॉबर्ट वानॉय, निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 3ए

लाल सागर जंगल में

समीक्षा

I. मिस्र से मुक्ति, निर्गमन 1-11

एफ. फसह, निर्गमन 12:1-13:16

पिछली बार हमारे सत्र के अंत में, हमने फसह के बारे में बात की थी जो रोमन अंक I है, "मिस्र से मुक्ति, निर्गमन 1-11," अक्षर F, "फसह, निर्गमन 12:1-13:16।" यदि आपको याद हो तो हमारे पिछले सत्र के अंत में, हमने "फसह का धर्मशास्त्र" विषय पर जे. मोटयेर के व्याख्यान नोट्स के पैराग्राफों के उद्धरणों को देखा था और उन्होंने उन 5 शब्दों के साथ फसह के धर्मशास्त्र का सारांश दिया था: प्रायश्चित, मुक्ति, प्रतिस्थापन, उद्धार और तीर्थयात्रा।

जी. मिस्र से प्रस्थान और लाल सागर के माध्यम से पलायन - निर्गमन 13:17-15:21

तो हम उस बिंदु को उठाएंगे और जी की ओर बढ़ेंगे, जो है, "मिस्र से प्रस्थान और लाल सागर के माध्यम से पलायन - निर्गमन 13:17-15:21।" मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि इस्राएलियों को पूर्ण मुक्ति वास्तव में तब तक नहीं मिली जब तक कि वे लाल सागर को पार नहीं कर लेते। यह दिलचस्प है, उस एक ही घटना में इज़राइल को छुटकारा मिल गया और मिस्र भगवान के न्याय के अधीन आ गया। आपके पास कुछ वैसा ही है जैसा आपके पास विपत्तियों के समय था, जहां मिस्रियों और इस्राएलियों के बीच भेदभाव था। यहां आप इसका एक और उदाहरण देख सकते हैं। अध्याय 12, श्लोक 33 में, उस आखिरी महामारी के बाद, ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु के बाद, मिस्रियों ने लोगों से जल्दी से देश छोड़ने का आग्रह किया, अन्यथा, उन्हें डर था, "हम सभी मर जाएंगे।" वास्तव में, यदि आप पद 31 पर वापस जाते हैं, तो फिरौन ने मूसा और हारून से कहा, “तुम और इस्राएलियों, मेरे लोगों को छोड़ दो। अपनी प्रार्थना के अनुसार जाकर प्रभु की आराधना करो। जैसा आपने कहा था, अपनी भेड़-बकरी और गाय-बैल ले जाओ और जाकर मुझे आशीर्वाद दो।” इसलिए फिरौन और मिस्रियों ने इस्राएलियों से चले जाने का आग्रह किया, और उन्होंने ऐसा ही किया, परन्तु फिरौन ने

अपना मन बदल लिया।

जब आप अध्याय 14 पर पहुँचते हैं, तो आप श्लोक 5 में पढ़ते हैं, "जब मिस्र के राजा को बताया गया कि लोग भाग गए हैं, तो फिरौन और उसके अधिकारियों ने उनके बारे में अपना मन बदल दिया और कहा, 'हमने क्या किया है? हमने इस्राएलियों को जाने दिया है और उनकी सेवाएँ खो दी हैं।'' इसलिए वे उनका पीछा करने निकल पड़े। यह कुछ ऐसा है जिसका हमने पहले ही उल्लेख किया था। मिस्रवासी अपनी सेवाएँ खोना नहीं चाहते थे। वे उन पर नियंत्रण रखना चाहते थे, उनसे लाभ उठाना चाहते थे, उनका शोषण करना चाहते थे और उन्हें खोना नहीं चाहते थे। अब उनमें जागरूकता आ गई है - हमने इस महान कार्यबल को खो दिया है। आइये उन्हें वापस लौटने के लिए मजबूर करें।

इसलिए, इस्राएली मिस्र से भाग रहे हैं, और फिरौन ने उनका पीछा करने का फैसला किया। इस्राएलियों के रवैये पर ध्यान दें। अध्याय 14 के श्लोक 10 में, “जैसे ही फ़िरौन निकट आया, इस्राएलियों ने ऊपर देखा, और मिस्री उनके पीछे चले आ रहे थे। वे भयभीत हो गये और उन्होंने प्रभु की दोहाई दी। उन्होंने मूसा से कहा, क्या मिस्र में कब्रें न होने के कारण तू हम को मरने के लिथे जंगल में ले आया? तू ने हमें मिस्र से निकाल कर हमारे साथ क्या किया? क्या हम ने मिस्र में तुम से न कहा था, कि हमें अकेला छोड़ दो। आइए हम मिस्रियों की सेवा करें।'' हमारे लिए रेगिस्तान में मरने से बेहतर होता कि हम मिस्रियों की सेवा करते।'' अब इन सभी चमत्कारी संकेतों और चमत्कारों के बाद जो प्रभु ने उनकी ओर से किए थे, ऐसा नहीं लगता है बहुत आभारी प्रतिक्रिया. उन्होंने अपने उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए प्रभु को पुकारा और प्रभु ने उनकी प्रार्थनाओं का जवाब दिया और उन्हें बचाया। लेकिन फिर उन्होंने शिकायत की. यह शिकायतों की श्रृंखला में से पहली है जो इस बिंदु से लेकर उस पूरे जंगल काल तक जाती है जहां इज़राइल लगातार बड़बड़ा रहा था और शिकायत कर रहा था।

1. प्रार्थना और कार्रवाई

लेकिन मूसा की प्रतिक्रिया क्या थी? अध्याय 14 श्लोक 13 में मूसा उत्तर देता है, “डरो मत। दृढ़ रहें और आप देखेंगे कि प्रभु आज आपको मुक्ति दिलाएंगे। आज आप जिन मिस्रवासियों को

देख रहे हैं, उन्हें आप फिर कभी नहीं देख पाएंगे। यहोवा तुम्हारे लिये लड़ेगा। आपको केवल स्थिर रहने की आवश्यकता है।" फिर श्लोक 15 और 16 में प्रभु मूसा से क्या कहते हैं, "क्या तुम मुझे पुकार रहे हो? इस्राएलियों से कहो कि आगे बढ़ें और अपनी लाठी उठाएँ, और अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाकर जल को बाँट लें, कि इस्राएली सूखी भूमि से होकर पार हो जाएँ।" मुझे लगता है कि उस कथन में आप देखते हैं कि प्रभु चाहते हैं कि हम प्रार्थना करें और उनसे मुक्ति की तलाश करें, लेकिन साथ ही, वह चाहते हैं कि हम कार्य करें। इस्राएली आगे बढ़े और उसने उन्हें छुड़ाया। यह हमें जल के विभाजन की इस उल्लेखनीय घटना की ओर ले जाता है जिसने इस्राएलियों को लाल सागर पार करने में सक्षम बनाया। मैं एक मिनट में लाल सागर के बारे में कुछ कहूंगा - लेकिन पद 21 में आप पढ़ते हैं, "उस पूरी रात यहोवा ने तेज पूर्वी हवा से समुद्र को पीछे खींच दिया और पानी विभाजित हो गया और इस्राएली सूखी भूमि पर समुद्र के पार चले गए ।"

2. लाल सागर पार कहाँ था?

लाल सागर से होकर गुजरने के बारे में अक्सर यह सवाल उठता है कि वास्तव में यह कहाँ हुआ था और वह जलराशि क्या थी जिसे इस्राएली पार करने में सक्षम थे। निर्गमन 13:17 में, आपने पढ़ा, "जब फिरौन ने लोगों को जाने दिया, तो परमेश्वर ने उन्हें पलिश्ती देश के रास्ते पर नहीं चलाया, यद्यपि वह छोटा था।" दूसरे शब्दों में, स्वाभाविक रूप से वे उत्तर की ओर गए होंगे और फिर अच्छी तरह से तय किए गए वाया मैरिस तटीय राजमार्ग का अनुसरण करते हुए दक्षिणी कनान में गाजा के क्षेत्र में पहुंच गए होंगे। लेकिन वह उन्हें उस रास्ते पर नहीं ले गया, क्योंकि भगवान ने कहा, "'अगर उन्हें युद्ध का सामना करना पड़ा तो वे अपना मन बदल सकते हैं और मिस्र लौट सकते हैं।' इसलिए भगवान ने लोगों को रेगिस्तानी रास्ते से लाल सागर की ओर ले गए।"

3. यम सुफ़ - नरकट का सागर

वहां आपको लाल सागर का पहला संदर्भ मिलता है। यदि आपके पास एनआईवी अनुवाद है तो आप वहां एक टेक्स्ट नोट देखेंगे, जो हिब्रू है *रतालू सुफ़* वह है "नरकट का सागर।" हिब्रू है *रतालू सुफ़,* जिसका शाब्दिक अनुवाद "सी ऑफ रीड्स" है। अनुवाद "लाल सागर" सेप्टुआजेंट से आया है

- इसी तरह सेप्टुआजेंट अनुवादकों ने हिब्रू का अनुवाद किया *रतालू सुफ़*, और फिर यह लैटिन वुल्गेट के माध्यम से और अंग्रेजी संस्करणों में आया। यदि आप इस शब्द के उपयोग को देखें *रतालू सुफ़* इस एक्सोडस कथा के अलावा, आप पाते हैं कि इसके कई प्रकार के उपयोग हैं। स्लाइड 14 पर यदि आप सिनाई प्रायद्वीप को देखें तो आपके पास पानी के ये दो भंडार हैं - यह सिनाई प्रायद्वीप के पश्चिम में खाड़ी है, जिसे आज अकाबा की खाड़ी के रूप में जाना जाता है और यह पूर्व की ओर स्वेज की खाड़ी है। आज जिसे हम लाल सागर कहते हैं वह मानचित्र से गायब हो गया है। आपको ये दो भुजाएँ लाल सागर से आती हुई मिलेंगी, एक सिनाई प्रायद्वीप के पूर्व में, एक इसके पश्चिम में। अब स्वेज की खाड़ी पर वापस चलते हैं। यदि आप संख्याओं की पुस्तक में देखें, तो आप पा सकते हैं *रतालू सुफ़* पानी के इस शरीर का जिक्र। लेकिन आप इसका उपयोग भी पा सकते हैं, और इस मामले में ऐसा लगता है, स्वेज़ की खाड़ी के सिरे से लेकर भूमध्य सागर तक के बिटर लेक्स क्षेत्र के लिए। वहाँ झीलों की एक श्रृंखला है और ऐसा लगता है कि यह उस क्षेत्र को भी संदर्भित करता है।

4. पलायन का मार्ग

जब आप निर्गमन के मार्ग पर पहुँचते हैं, तो इस मानचित्र पर आपको रामसेस से वे स्थान दिखाई देंगे, जहाँ से उनकी शुरुआत हुई थी, ऊपर और वहाँ के तटीय द्वीपों के ऊपर और नीचे तटीय राजमार्ग में। लेकिन यह अत्यधिक असंभावित लगता है क्योंकि उस श्लोक के कारण जो हमने कुछ मिनट पहले पढ़ा था जहां प्रभु ने उनसे अध्याय 13 के श्लोक 17 में कहा था कि वे फ़िलिस्ती देश से होकर जाने वाली सड़क पर नहीं जाएंगे, भले ही वह छोटी थी। इस तथाकथित "पलिश्तियों की भूमि के रास्ते" के किनारे मिस्र के किले थे और ऐसा लगता है कि अगर इसराइली उस रास्ते पर जाने की कोशिश करते तो बड़ी मुसीबत में पड़ जाते। इसलिए जैसा कि हम स्लाइड 15 पर देखते हैं, ज्यादातर लोग सोचते हैं कि पलायन का मार्ग दक्षिण-पूर्व से होकर, इस दिशा में नीचे और फिर इन कड़वी झीलों में से एक के पार था और यह उन कड़वी झीलों में से एक है जो कि है *रतालू सुफ़*, जिसे बाइबिल पाठ का "लाल सागर" कहा जाता है। मुझे लगता है कि इसके बारे में जागरूक होना महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि आप "लाल सागर" पढ़ते हैं और मानचित्र देखते हैं तो आपको आश्चर्य होगा कि इज़राइल इस मानचित्र से दक्षिण की ओर कैसे आया और लाल सागर को पार कैसे किया। लाल

सागर पानी का एक विशाल भंडार है। पूरी रात चलने वाली तेज़ पूर्वी हवा लाल सागर के पानी को हिला नहीं पाएगी। यह संभवतः इस झील क्षेत्र के एक क्षेत्र में पानी को इस तरह से स्थानांतरित कर सकता था जिससे इस्राएलियों को पार करने में मदद मिलती। तो ऐसा लगता है कि निर्गमन के मार्ग को देखने का यह सबसे अच्छा तरीका है।

5. स्थान के नाम की कठिनाई

पाठ में अनेक स्थानों के नामों का उल्लेख है। निःसंदेह, निर्गमन के मार्ग को इंगित करने का प्रयास करने के लिए उन स्थानों के नामों पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है। समस्या यह है कि स्थानों के नाम पहचानना बहुत कठिन है। निर्गमन 13:17 कहता है, "वे पलिश्तियों के देश से होते हुए मार्ग पर नहीं चलेंगे, परन्तु परमेश्वर ने लोगों को जंगल के मार्ग से इस ओर ले जाया।" *रतालू सुफ़ा*" लेकिन निर्गमन 12:37 कहता है, "इस्राएलियों ने रामसेस से सुक्कोत तक यात्रा की। और फिर आप 13:20 में पढ़ते हैं, सुक्कोत छोड़ने के बाद उन्होंने रेगिस्तान के किनारे पर एताम में डेरे डाले। इसलिए उन स्थानों के सटीक स्थान को लेकर विवाद है।

लेकिन दिलचस्प बात यह है कि यहीं से वे मुड़े। आप निर्गमन 14:1 और 2 में पढ़ते हैं, "यहोवा ने मूसा से कहा, 'इस्राएलियों से कहो कि वे पीछे मुड़ें और मिगदोल और समुद्र के बीच पी हाहिरोत के पास डेरे डालें। उन्हें बाल सपोन के ठीक सामने समुद्र के किनारे डेरा डालना है।" 14:1 और 2 में तीन स्थानों के नाम हैं—पी हहिरोत, मिगदोल, और बाल सपोन। भूगोल के अधिकांश विद्यार्थियों का कहना है कि वे तीन स्थान पहचान योग्य नहीं हैं। यदि हम वास्तव में पलायन के मार्ग का पता लगाना चाहते हैं तो ये महत्वपूर्ण स्थल हैं जिनके बारे में हमें जानना आवश्यक है। हालाँकि, यह वह मोड़ है जो एक तरफ पानी के साथ इस्राएलियों को ट्रैक करता है और दूसरी तरफ मिस्र की सेना उनका पीछा करती है। मुझे लगता है कि आप यहां जो पाते हैं वह एक दिलचस्प स्थिति है। परमेश्वर ने उन्हें मुड़ने की आज्ञा दी। यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएलियों से कहो कि लौट जाओ और इसी स्थान पर डेरे खड़े करो।" और फिर पद 3, "फ़िरौन समझेगा कि इस्राएली देश भर में घबराए हुए फिर रहे हैं, और मैं उसके मन को कठोर कर दूंगा, और वह उनका पीछा करेगा।" तो आप देखिए, प्रभु फ़िरौन को फिर से यहाँ आने और इस्राएलियों पर हमला करने के लिए मंच तैयार

कर रहे हैं, जो ईश्वर को फिर से अपनी ताकत, अपनी भुजा, अपनी शक्ति दिखाने और मिस्रियों पर न्याय और मुक्ति लाकर खुद को गौरवान्वित करने में सक्षम करेगा। इस्राएलियों पर. श्लोक 4 को देखें, जहां प्रभु ने कहा, "मैं फिरौन के हृदय को कठोर कर दूंगा और वह उनका पीछा करेगा, परन्तु मैं फिरौन और उसकी सारी सेना के द्वारा अपने लिए महिमा प्राप्त करूंगा।" फिर अगले वाक्यांश पर ध्यान दें - यह वही कथन है जो हमने दस विपत्तियों की श्रृंखला के दौरान कहा है - "और मिस्रवासी जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं।" और यह 5:1 में फिरौन के प्रश्न पर वापस जाता है, "यहोवा कौन है? मुझे यहोवा की सेवा क्यों करनी चाहिए?"

6. इजराइल ने मिस्रवासियों को नष्ट कर दिया

यदि आप 14:17-18 तक जाते हैं, तो प्रभु कहते हैं, "मैं फिरौन और उसकी सारी सेना के द्वारा उसके रथों और सवारों के द्वारा महिमा प्राप्त करूंगा और जब मैं फिरौन, उसके रथों के माध्यम से महिमा प्राप्त करूंगा तो मिस्रवासी जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं।" और उसके घुड़सवार।" तो वास्तव में आपके पास लाल सागर के माध्यम से इस उद्धार में निरंतरता है, जो बिल्कुल वही चीज़ है जो हमने विपत्तियों में देखी थी। टोरा पर नहूम सरना की टिप्पणी, एक्सोडस पर खंड, में वह मिस्रवासियों को गुमराह करने और उन्हें उनके विनाश के लिए लुभाने की एक चाल की बात करता है। फिर वह टिप्पणी करता है, "सुलैमान के समय तक मिस्र इस्राएल के इतिहास में दोबारा प्रकट नहीं होता है।" लाल सागर के माध्यम से इस मुक्ति के बाद अगली बार जब आप मिस्रवासियों के बारे में पढ़ेंगे तो वह सुलैमान के समय में होगा। तो यह इज़राइल के लिए एक बहुत बड़ी मुक्ति थी।

अध्याय 14 के अंत में, छंद 30 और 31 में आपके पास एक बहुत ही महत्वपूर्ण कथन है, "उस दिन प्रभु ने इस्राएल को मिस्रियों के हाथों से बचाया और इस्राएल ने मिस्रियों को किनारे पर मरे हुए देखा और जब इस्राएलियों ने महान शक्ति देखी यहोवा ने मिस्रियों के विरूद्ध जो प्रगट किया, इस से लोग यहोवा का भय मानते थे, और उस पर और उसके दास मूसा पर भरोसा रखते थे। तो आप देखिए, इस्राएल ने इस महान मुक्ति को देखा, और यह उनकी ओर से भगवान का यह शक्तिशाली कार्य था जिसने उन्हें यहोवा के साथ-साथ मूसा पर भी विश्वास और विश्वास दिलाया, जो वह था जिसे प्रभु ने उन्हें मिस्र से बाहर निकालने के लिए इस्तेमाल किया था। . आप उस कथन को

श्लोक 31 में देखते हैं, "जब इस्राएलियों ने देखा," एनआईवी कहता है, "महान शक्ति।" यदि आप इसे हिब्रू में देखें तो यह वस्तुतः "महान हाथ" है। इसलिए मिस्र के हाथ का परमेश्वर के हाथ से कोई मुकाबला नहीं था क्योंकि उसने इस्राएल को मिस्र से बचाया था।

द्वितीय. जंगल में इस्राएल - निर्गमन 15:22 से व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अंत तक

आइए व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अंत तक रोमन अंक II, "जंगल में इस्राएल," निर्गमन 15:22 पर चलते हैं। वह बहुत सारी सामग्री है. लाल सागर के माध्यम से मुक्ति के बाद, इज़राइल सिनाई के लिए अपना रास्ता शुरू करते हैं और वे रास्ता भटक जाते हैं, तब से लेकर भूमि में प्रवेश करने से ठीक पहले मोआब के मैदानों तक आने से पहले जंगल में अड़तीस साल तक भटकते रहे। मूसा के जीवन के अंत की ओर कनान का। यह व्यवस्थाविवरण के अंत में 40 साल की अवधि के लिए मिस्र से उनका छुटकारा है, और निश्चित रूप से, इसका केंद्र सिनाई में इज़राइल है।

आगे बढ़ने से पहले मैं बता सकता हूँ कि अध्याय 15 लाल सागर के माध्यम से उस महान मुक्ति का एक काव्यात्मक सारांश है। अध्याय 14 में आपके पास इसका वर्णनात्मक वर्णन है, और फिर आपको मूसा और मरियम का यह गीत मिलता है जो लाल सागर के माध्यम से उस जीत का जश्न मनाता है। इसलिए हमने श्लोक 22 से उठाया जहां आपने पढ़ा कि मूसा ने इस्राएल को लाल सागर से निकाला और शूर के रेगिस्तान में चला गया।

A. इस काल का महत्व

आपकी रूपरेखा पर सूचना ए है, "इस अवधि का महत्व।" यहां केवल कुछ सामान्य टिप्पणियाँ हैं। यह समय की अपेक्षाकृत छोटी अवधि है - 40 वर्ष। मैं अपेक्षाकृत संक्षेप में कहता हूं क्योंकि यदि आप इसकी तुलना पितृसत्तात्मक काल से करते हैं, जो निर्गमन की पुस्तक से पहले, उत्पत्ति 12 से उत्पत्ति 50 तक, यानी 215 वर्ष है। तो उत्पत्ति 12-50 में समय की एक लंबी अवधि है, जो 38 अध्याय है, हिब्रू बाइबिल में केवल 68 पृष्ठ, 215 वर्ष। यहां आपके पास 40 वर्ष हैं जिसमें हिब्रू बाइबिल में 353 पृष्ठ और 137 अध्याय हैं। दूसरे शब्दों में, यहां आपके पास समय की कम अवधि है, लेकिन संभवतः लगभग पांच गुना अधिक सामग्री है। निःसंदेह, उस सामग्री का अधिकांश भाग उस

कानून में कानूनी सामग्री है जिसे मूसा ने सिनाई पर्वत पर प्रकट किया था। इसलिए यह ऐतिहासिक कथा के बजाय काफी हद तक कानूनी सामग्री है। मुझे लगता है कि इसका नतीजा यह होता है कि अक्सर ऐतिहासिक आख्यानों को नजरअंदाज कर दिया जाता है। कानूनी सामग्री पर ध्यान केंद्रित किया गया है। जब आप लैव्यव्यवस्था के बारे में सोचते हैं तो आप कानूनी सामग्री के बारे में सोचते हैं। व्यवस्थाविवरण काफी हद तक कानूनी सामग्री है, जैसा कि एक्सोडस पुस्तक का उत्तरार्द्ध भाग है। लेकिन निर्गमन 15 से लेकर व्यवस्थाविवरण के अंत तक पुराने नियम के इस खंड में जो चीजें घटित होती हैं, उनका इज़राइल के इतिहास में बहुत महत्व है। मैं कहूंगा कि यह सामग्री संपूर्ण पुराने नियम के रहस्योद्घाटन के इतिहास में अत्यधिक प्रमुख स्थान रखती है। इसका कारण यह है कि इन अध्यायों में हम यहोवा और कुलपतियों के वंशजों-अब्राहम, इसहाक और जैकब के बीच सिनाई वाचा की स्थापना के बारे में सीखते हैं। यह उस वाचा के माध्यम से है जो मूसा के कार्य के माध्यम से सिनाई पर्वत पर स्थापित की गई थी कि इज़राइल राष्ट्र औपचारिक रूप से भगवान के वाचा वाले लोगों के रूप में स्थापित हो गया। यह क्या हुआ। उस अनुबंध की शर्तों के तहत, यह नव स्थापित राष्ट्र एक ऐसा राष्ट्र है जिस पर यहोवा द्वारा उनके दिव्य राजा के रूप में शासन किया जाना है। तो आप शायद कह सकते हैं कि राष्ट्र एक धर्मशासित राष्ट्र है। भगवान राजा है.

1. कानूनी सामग्री पर टिप्पणियाँ

पुराने नियम के अधिकांश भाग में जो कानूनी सामग्रियां दिखाई देती हैं, वे वाचा की शर्तें हैं, वे दायित्व हैं जो यह महान राजा उन लोगों पर डालता है जिनके साथ उसने वाचा में प्रवेश किया है। वह कानूनी सामग्री इजराइल को दी गई है क्योंकि वह इजराइल के रहने के तरीके को परिभाषित करता है। इस्राएल को ऐसे तरीके से रहना था जो उन्हें पृथ्वी पर अन्य सभी राष्ट्रों से अलग कर दे। उन्हें परमेश्वर के अनुबंधित लोगों के रूप में रहना था।

मैं कानून पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। आपने शायद सुना होगा कि आप कानून को सामग्री की तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं, और उस तरह के विभाजन में कुछ मूल्य हैं: नैतिक कानून, नागरिक कानून और औपचारिक कानून। जब आप कानून का इस प्रकार का वर्गीकरण सुनते हैं, तो नैतिक कानून आमतौर पर निर्गमन 20 में दस आज्ञाओं को संदर्भित करता है।

मुझे लगता है कि दस आज्ञाओं के लिए एक बेहतर लेबल मूलभूत कानून है। मुझे लगता है कि यह एक बेहतर लेबल है क्योंकि यदि आप कहते हैं कि यह नागरिक और औपचारिक कानून से अलग नैतिक कानून है, तो इसका मतलब यह है कि नागरिक और औपचारिक कानून में नैतिक पहलू नहीं हैं, जो निश्चित रूप से हैं। लेकिन दस आज्ञाएँ मूलभूत कानून हैं। दस आज्ञाओं पर नागरिक और औपचारिक तरीके से काम किया जाता है और इन अधिक अमूर्त सिद्धांतों को ठोस आकार दिया जाता है। मैं इसके बारे में बाद में और अधिक बताऊंगा। लेकिन आपके पास मूलभूत कानून हैं, दस आज्ञाएँ हैं, नागरिक कानून पारिवारिक मामलों, विवाह, संपत्ति के अधिकार, विरासत, आप दासों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इस तरह की चीजों के लिए नियम हैं जिनका सामाजिक और सरकारी संगठन से लेना-देना है। तो स्पष्ट रूप से आपके पास औपचारिक कानून में दी गई सामग्री की एक बड़ी मात्रा है जो धार्मिक अनुष्ठानों, बलिदानों, किस प्रकार के बलिदानों, उन्हें कैसे लाया जाना चाहिए, त्यौहार, उन्हें कैसे मनाया जाना चाहिए, पुजारियों के कर्तव्य, सभी प्रकार के नियम हैं उस प्रकार के सांस्कृतिक मामलों का।

अब, जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, वह कानूनी सामग्री इस्राएलियों को उनके दैनिक जीवन के आचरण में मार्गदर्शन करने के लिए दी गई है। यह बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्हें इन सभी नियमों के अनुरूप अपना जीवन जीना था। वे नियम बुराई के विरुद्ध रोकथाम के रूप में कार्य करते थे। यदि कोई कानून का पालन करता है, तो वह निश्चित रूप से ऐसा जीवन जीएगा जो भगवान का सम्मान करेगा और उन कई गलतियों से बच जाएगा जिनमें एक व्यक्ति अन्यथा शामिल हो सकता है।

मुझे लगता है कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि कानून एक दर्पण था जिसमें इस्राएली खुद को पापी के रूप में देख सकते थे और अपनी गिरी हुई स्थिति को पहचान सकते थे। कोई भी व्यक्ति कानून के सभी दायित्वों को पूरी तरह से पूरा नहीं कर सका। और जैसा कि रोमियों 3:20 कहता है, "पाप का ज्ञान व्यवस्था के द्वारा होता है।" और गलातियों 3:24 कहता है, "हमें मसीह के पास लाने के लिए कानून हमारा स्कूल मास्टर था," क्योंकि अंततः जब एक व्यक्ति कानून की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में अपनी असमर्थता को पहचानता है, तो वही उसे मसीह के पास लाता है। उस कानूनी सामग्री पर कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, वह

कानूनी सामग्री एक ऐतिहासिक ढांचे में स्थापित है। हमारी चिंता मुख्य रूप से ऐतिहासिक ढाँचे में है और इसमें माउंट सिनाई में जो हुआ और उसके बाद जंगल में भटकना शामिल है।

B. इस काल की सामान्य विशेषताएँ

1. मुक्ति सर्वोपरि है

आइए बी की ओर आगे बढ़ें, "इस अवधि की सामान्य विशेषताएं।" आपकी रूपरेखा में मेरे पास चार उप-बिंदु हैं। पहला है, "मोचन सबसे महत्वपूर्ण है।" मिस्र से इजराइल की मुक्ति उसकी ओर से ईश्वर के शक्तिशाली कृत्यों के संबंध में प्राचीन इजराइल की केंद्रीय स्वीकारोक्ति बन गई। जब इज़राइल ने अपने इतिहास और जिस तरह से भगवान ने उनके इतिहास में काम किया था, उस पर विचार किया, तो जिस चीज़ ने सबसे प्रमुख स्थान लिया, वह मिस्र से उनका उद्धार था। यह इज़राइल के पिछले इतिहास में ईश्वर के बचाने वाले कार्यों की स्वीकारोक्ति का सर्वोच्च बिंदु बन जाता है।

एक। तीन अनुबंध नवीनीकरण और निर्गमन घटना

मैं आपको पवित्रशास्त्र में आगे कुछ स्थानों की ओर इंगित करना चाहता हूँ जहाँ इस बात का उल्लेख मिलता है कि ईश्वर ने इस्राएल को मिस्र से बाहर निकालने में क्या किया था। व्यवस्थाविवरण 26 में, व्यवस्थाविवरण जंगल की अवधि के अंत में वाचा का नवीनीकरण है, इसमें पहले फल और दशमांश का प्रसाद लाने का विधान है। व्यवस्थाविवरण 26 के श्लोक 5 में, जब तुम अपनी भूमि की पहली उपज यहोवा के पास भेंट के रूप में लाते हो, तो इस्राएल से कहा जाता है, "तब तू अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने घोषणा करना" क्या? यह एक स्वीकारोक्ति है. “मेरे पिता एक घुमंतू अरामी थे। वह कुछ लोगों के साथ मिस्र चला गया, वहाँ रहा और एक महान, शक्तिशाली और असंख्य राष्ट्र बन गया। परन्तु मिस्रियों ने हमें कष्ट दिया, और हम से कठिन परिश्रम कराया। तब हम ने अपने पितरोंके परमेश्वर यहोवा की दोहाई दी। प्रभु ने हमारी आवाज सुनी और हमारे दुख, परिश्रम और उत्पीड़न को देखा। इस प्रकार यहोवा ने अपने बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा चिन्हों और चमत्कारों से हमें मिस्र से बाहर निकाला। वह हमें इस स्थान पर ले आया और हमें

यह देश दिया, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं।" आप उस स्वीकारोक्ति के मूल में देखते हैं कि प्रभु ने अतीत में इस्राएल के लिए क्या किया था। ध्यान मिस्र से मुक्ति पर है।

यहोशू 24:17 में, आपके पास एक और वाचा का नवीनीकरण है, और आपके पास मूसा के जीवन के अंत में व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में एक वाचा का नवीनीकरण है। इजराइल का अगला नेता जोशुआ है. यहोशू के जीवन के अंत में वह पूरे इस्राएल को शकेम में बुलाता है और फिर से आपको एक वाचा नवीनीकरण समारोह मिलता है। 24:17 में ध्यान दें, यहोशू ने कहा, "वह हमारा परमेश्वर यहोवा ही था, जो हमें और हमारे पुरखाओं को दासत्व के देश मिस्र से निकाल लाया, और हमारी आंखों के साम्हने बड़े बड़े चिन्ह दिखाए। उन्होंने हमारी पूरी यात्रा के दौरान उन सभी देशों में हमारी रक्षा की, जिनमें हमने यात्रा की। और यहोवा ने एमोरियों समेत सब जातियोंको हमारे साम्हने से निकाल दिया, कि वे उस देश में बस जाएं। तो प्रभु ने क्या किया है? उसने हमें मिस्र से छुड़ाया, और वह हमें कनान देश में ले आया।

यदि आप 1 शमूएल 12 पर जाएं, तो न्यायाधीशों की अवधि के ठीक बाद और राजशाही की स्थापना के समय, सैमुअल द्वारा गिलगाल में एक और अनुबंध नवीनीकरण समारोह आयोजित किया गया था। यह अवसर राजा के रूप में शाऊल के उद्घाटन का था। सैमुअल क्या कहता है? पहला शमूएल 12:6 कहता है, "शमूएल ने लोगों से कहा, 'वह यहोवा है जिसने मूसा और हारून को नियुक्त किया और तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया। अब यहीं खड़े रहो, क्योंकि मैं यहोवा के साम्हने तुम्हारे सामने उन सब धर्ममय कामों का प्रमाण रखूंगा जो याकूब के मिस्र में प्रवेश करने के बाद तुम्हारे पुरखाओं के साम्हने यहोवा ने किए थे। उन्होंने सहायता के लिये यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने मूसा और हारून को भेजकर तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र से निकालकर इस स्थान में बसाया। परन्तु वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए।" तो फिर, ध्यान मिस्र से मुक्ति पर है।

बी। भविष्यवक्ताओं में निर्गमन और निर्वासन के बाद

उदाहरण के लिए, यदि आप भविष्यवक्ताओं के पास जाते हैं, मीका 6:3 और उसका अनुसरण करते हैं, तो आपके पास अक्सर एक वाचा मुकदमा मार्ग कहा जाता है, जहां इज़राइल ने वाचा को तोड़ दिया है और प्रभु उन्हें इसका हिसाब देने के लिए आते हैं। तो आप 6:3 में पढ़ते हैं,

“यहोवा जो कहता है उसे सुनो, खड़े हो जाओ, पहाड़ों के सामने अपना मामला लड़ो, पहाड़ियों को तुम्हारी बात सुनने दो। सुनो, हे पहाड़ों, प्रभु का आरोप। हे पृथ्वी के सनातन मूलनिओ, सुनो, वह इस्राएल पर दोष लगा रहा है।” वह आरोप मूलतः यह है कि आपने अनुबंध तोड़ा है। परन्तु ध्यान दीजिए कि इस प्रकार क्या है, “हे मेरे लोगों, मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया है? मैंने तुम पर कैसा बोझ डाला है? मुझे जवाब दें। मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया, और दासत्व के देश से छुड़ाया। मैंने मूसा और हारून और मरियम को तुम्हारी अगुवाई करने के लिये भेजा। मेरे लोग मोआब के राजा बालाक को याद करते हैं” इत्यादि। इसलिए यहोवा इस्राएल को हिसाब देने के लिए कहता है और ऐसा करके वह उन्हें याद दिलाता है कि उसने उनके लिए क्या किया है। वह उनके प्रति वफादार रहा है, फिर भी वे उससे दूर हो गये हैं। लेकिन उसने उनके लिए जो किया उसके मूल में मिस्र से मुक्ति है। “मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ।”

नहेमायाह 9 पर जाएँ। वहाँ नहेमायाह की एक प्रार्थना है जब वह प्रभु से विमुख होने के इस्राएल के पाप को स्वीकार करता है और उस प्रार्थना के दौरान, नहेमायाह 9:9, वह कहता है, "तुमने मिस्र में हमारे पूर्वजों की पीड़ा देखी थी तू ने लाल समुद्र के पास उनका रोना सुना, और फिरौन और उसकी सारी प्रजा के साम्हने आश्चर्यकर्म और चमत्कार किए। आप जानते हैं कि मिस्रवासी उनके साथ कितना अहंकारपूर्ण व्यवहार करते थे। आपने अपने लिए एक नाम बनाया जो आज तक बना हुआ है,” और यह सदियों बाद की बात है। “तू ने उनके साम्हने समुद्र को बाँट दिया ताकि वे सूखी भूमि पर चल सकें। परन्तु तू ने उनके पीछा करनेवालोंको गहिरे जल में पत्थर की नाईं फेंक दिया। दिन को तू ने बादल के खम्भे के द्वारा उनकी अगुवाई की, और रात को आग का खम्भा दिन की रोशनी के समान था।

तो यह इज़राइल की केंद्रीय स्वीकारोक्ति बन जाती है कि ईश्वर ने उनके लिए क्या किया है। उसने उन्हें मिस्र से छुड़ाया। उस स्वीकारोक्ति का संदर्भ का एक भौतिक या भौगोलिक बिंदु है: मिस्र। लेकिन यह अपने साथ पाप और मृत्यु से मुक्ति का आध्यात्मिक प्रतीक भी लेकर आता है। तुम्हें याद है जब हमने फसह के बारे में बात की थी। हमने कहा कि फसह ने इस्राएल को मिस्र से मुक्ति की याद दिलायी। लेकिन इसने इज़राइल को पाप और मृत्यु से मुक्ति की भी याद दिलायी। जब वह लहू चौखट और चौखट की चौखट पर छिड़का गया, तब मृत्यु का दूत इस्राएलियों के ऊपर

से गुजरा। इस्राएलियों को रक्त के प्रायश्चित्त कार्य की उतनी ही आवश्यकता थी जितनी मिस्रवासियों को। और इस प्रकार आपको मिस्र से इज़राइल की मुक्ति के संबंध में मुक्ति की भाषा का उपयोग मिलता है। यदि आप निर्गमन 15 पर वापस जाते हैं, जो उनके उद्धार का काव्यात्मक वर्णन है, तो निर्गमन 15 के पद 13 को देखें, "अपने अटल प्रेम में, आप उन लोगों का नेतृत्व करेंगे जिन्हें आपने छुड़ाया है। तू अपनी शक्ति से उन्हें अपने पवित्र निवास तक ले जाएगा।" निर्गमन 15 के श्लोक 16 में, आपने पढ़ा, "तेरी भुजा के बल से, वे पत्थर के समान स्थिर रहेंगे - जब तक कि हे प्रभु, तेरे लोग पास से न निकल जाएँ, जब तक कि तेरे खरीदे हुए लोग पास से न निकल जाएँ। आप उन्हें लाएँगे और रोपेंगे।" तो आप मिस्र से बाहर इस मुक्ति पर उस तरह की भाषा लागू कर सकते हैं। इजराइल को छुड़ाया गया, इजराइल को खरीदा गया।

सी। भजनों में पलायन

यदि आप भजन 74 पर जाएं, तो आपको पद 2 में इसकी प्रतिध्वनि मिलेगी, जहां भजनकार कहता है, "उन लोगों को याद करो जिन्हें तुमने प्राचीन काल में खरीदा था," निर्गमन 15 में वही शब्द है, "अपनी विरासत के गोत्र को जिसे तुमने छुड़ाया था।" " यदि आप भजन 77, छंद 7-15 पर जाएँ, तो भजनकार ऐसी स्थिति में है जिसमें वह सोचता है कि प्रभु ने उसका अनुग्रह ठुकरा दिया है और वह चुप है। आपने पद 7 में पढ़ा, "क्या प्रभु सदैव के लिये अस्वीकार करेगा? क्या वह फिर कभी अपना अहसान नहीं जताएगा? क्या उसका अमोघ प्रेम सदा के लिए लुप्त हो गया? क्या ईश्वर दयालु होना भूल गया है? क्या उसने क्रोध में आकर अपनी करुणा छोड़ दी है?" अतः इस स्तोत्र का लेखक संकट की स्थिति में है जिसमें उसे ऐसा लगता है जैसे प्रभु उसे भूल गया है। लेकिन फिर श्लोक 10 में वह कहता है, "तब मैंने सोचा, 'मैं इसके लिए अपील करूंगा: परमप्रधान के दाहिने हाथ के वर्षों।" मैं यहोवा के कामों को स्मरण रखूंगा, हां, मैं तेरे प्राचीन आश्चर्यकर्मों को स्मरण रखूंगा। मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूंगा, तेरे पराक्रम के कामोंपर विचार करूंगा। हे परमेश्वर, तेरे मार्ग पवित्र हैं। कौन सा ईश्वर हमारे ईश्वर जितना महान है? आप चमत्कार करने वाले परमेश्वर हैं: आप लोगों के बीच अपनी शक्ति प्रदर्शित करते हैं। फिर श्लोक 15 पर ध्यान दें, "तू ने अपने पराक्रमी हाथ से अपनी प्रजा, याकूब और यूसुफ के वंश को छुड़ा लिया। हे परमेश्वर, जल ने तुझे देखा, जल ने तुझे देखा और

क्रोधित हुआ... आकाश गर्जना से गूँज उठा; तुम्हारे तीर आगे-पीछे चमकते रहे। बवंडर में तेरी गड़गड़ाहट सुनाई दी, तेरी बिजली ने जगत को प्रकाशित कर दिया; पृथ्वी कांप उठी और कांप उठी। तेरा मार्ग समुद्र से होकर जाता था, तेरा मार्ग विशाल जल से होकर जाता था, यद्यपि तेरे पदचिन्ह दिखाई नहीं देते थे।" यह सब किस बारे में बात कर रहा है? पद 20, "तू अपनी प्रजा को मूसा और हारून के द्वारा झुण्ड की नाईं ले चला।" यह लाल सागर के माध्यम से मुक्ति है। यहां इसका एक और काव्यात्मक वर्णन है, लेकिन आपके पास श्लोक 15 में फिर से मुक्ति की भाषा है। "अपनी शक्तिशाली भुजा से आपने अपने लोगों को छुड़ाया।" यह मुक्ति ही उस भजनहार को आशा देती है जो निराशा में था। उसने सोचा कि भगवान उसे भूल रहे हैं और फिर उसने खुद को याद दिलाया, "मुझे अतीत में भगवान के महान और शक्तिशाली कार्यों के बारे में सोचना चाहिए और यह भविष्य के लिए आशा देता है।" लेकिन यहां मेरा कहना यह है: मुक्ति मूलभूत है। यहां लोगों का एक समूह है जिन्हें भगवान अलौकिक चमत्कारी तरीके से बचाते हैं और छुटकारा दिलाते हैं और फसह के बलिदान में मिस्र से उनकी मुक्ति को पाप और मृत्यु से उनकी मुक्ति के साथ जोड़ा जाता है। उस मुक्ति का वर्णन करने के लिए जिस भाषा का उपयोग किया जाता है वह मुक्ति की भाषा है। इसलिए मुक्ति मूलभूत है।

2. वादा किया गया देश लक्ष्य था

आइए 2 पर चलते हैं, "वादा किया हुआ देश लक्ष्य था।" इज़राइल को मिस्र से बाहर ले जाया गया ताकि वह कनान की भूमि पर जा सके और उस पर कब्ज़ा कर सके, जिसका वादा परमेश्वर ने इब्राहीम से किया था। लेकिन रास्ते में विश्वास की कमी और अवज्ञा के कारण, संख्याओं में दर्ज, इज़राइल को जंगल में 38 साल की भटकने की सजा दी गई और एक नई पीढ़ी को कनान की भूमि विरासत में मिली। तो वादा किया हुआ देश लक्ष्य था, लेकिन वादा किए गए देश में प्रवेश करने की अनुमति देने से पहले इज़राइल को बहुत कुछ सीखना था। मुझे लगता है कि मुक्तिदायी इतिहास के आंदोलन के बड़े संदर्भ में, कनान में प्रवेश का विशिष्ट महत्व है। मुझे लगता है कि यह नई वाचा में जीवन के आशीर्वाद में प्रवेश के एक अनंतिम तरीके से विशिष्ट हो जाता है और फिर उससे भी आगे, मुझे लगता है कि यह शाश्वत अवस्था के बाकी हिस्सों में अपनी उच्चतम पूर्ति पाता है। इस प्रकार

इस्राएल कनान देश में प्रवेश कर रहा है। कनान को विश्राम की भूमि बनना था। लेकिन कनान की भूमि में इज़राइल का अनुभव हमेशा आराम का नहीं होता क्योंकि इज़राइल ईश्वर की इच्छा से इतना पीछे रह गया कि कनान की बाकी भूमि श्रम से भर गई। नई वाचा में एक आध्यात्मिक अर्थ है और अंततः आगे चलकर शाश्वत विश्राम मिलता है। भगवान का अंतिम विश्राम अभी आना बाकी है।

इब्रानियों 3 और 4 उस बारे में बात करते हैं। मैं उस अनुच्छेद को विस्तार से देखने के लिए समय नहीं लेना चाहता, बल्कि इब्रानियों 4:9 को देखना चाहता हूँ। इब्रानियों का लेखक कहता है, "परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है। क्योंकि जो कोई परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करता है, वह भी अपने काम से विश्राम लेता है, जैसे परमेश्वर ने अपने काम से किया। इसलिए आइए हम उस विश्राम में प्रवेश करने के लिए हर संभव प्रयास करें ताकि कोई भी उनकी अवज्ञा के उदाहरण का अनुसरण करके गिर न जाए," यह इस्राएलियों की अवज्ञा है। ऐतिहासिक रूप से, यह कनान भूमि के बारे में बात कर रहा है। आध्यात्मिक रूप से, या सामाजिक रूप से, यह मोक्ष की परिपूर्णता की एक तस्वीर है जिसे भगवान के लोगों द्वारा अनुभव किया जाता है, और युगांतिक रूप से यह शाश्वत राज्य और हमारे रहने और मसीह के साथ शासन करने की बात करता है। तो यहाँ एक विचार है जो कनान भूमि में प्रवेश के संबंध में पेश किया गया है जो धार्मिक महत्व रखता है और एक धार्मिक विषय बन जाता है जो पवित्रशास्त्र के बाकी हिस्सों से गुजरता है।

3. अपने लोगों के लिए भगवान की अलौकिक देखभाल

आइए 3 पर चलते हैं, "परमेश्वर की अपने लोगों के लिए अलौकिक देखभाल।" परमेश्वर ने तम्बू के निर्माण के लिए निर्देश दिये। अंततः तम्बू का निर्माण किया गया। तब प्रभु उस पर उतरते हैं, अपने लोगों के बीच में निवास करते हैं। यह निर्गमन की पुस्तक के अंत में है। इसलिए वह उनके साथ रह रहा है. उस बिंदु से आगे आग और बादल का खंभा जो उस तम्बू के ऊपर मंडराता था, जंगल के माध्यम से उनकी यात्रा में इज़राइल का मार्गदर्शन करने के लिए उठेगा और आगे बढ़ेगा। इसलिए प्रभु ने दिशा प्रदान की, उन्होंने पानी प्रदान किया, उन्होंने भोजन प्रदान किया, उन्होंने कपड़े प्रदान किये जो खराब नहीं होते थे। लेकिन जब आप उन आख्यानों को पढ़ते हैं, तो उस उल्लेखनीय प्रावधान के बावजूद, इस्राएली नियमित रूप से उसे देखने और उसकी सराहना करने में विफल रहे।

उन्होंने बड़बड़ाया और शिकायत की और जैसा उन्हें जवाब देना चाहिए वैसा नहीं दिया।

4. कानून की सामान्य विशेषताएं

4, "कानून की सामान्य विशेषताएं।" मुझे लगता है कि आपको यह समझने की ज़रूरत है कि मिस्र की गुलामी से छुड़ाए गए ये लोग भगवान के अनुबंधित लोगों के रूप में स्थापित हुए थे। वे अपनी अच्छाई के कारण परमेश्वर के अनुबंधित लोग नहीं बनाये गये थे। बल्कि भगवान की कृपा के कारण। वह मूलभूत है। व्यवस्थाविवरण 4:34-37 को देखें। मूसा कहते हैं, "क्या किसी ईश्वर ने कभी परीक्षण करके, चमत्कारों और चिन्हों और चमत्कारों से, युद्ध से, शक्तिशाली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से, या सभी की तरह महान और भयानक कामों से एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से अपने लिए लेने की कोशिश की है? तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मिस्र में तुम्हारे साम्हने तुम्हारे लिये क्या-क्या किया? ये बातें तुम्हें इसलिये दिखाई गईं, कि तुम जान लो कि यहोवा ही परमेश्वर है; उसके अलावा कोई और नहीं है. तुम्हें अनुशासित करने के लिये उसने स्वर्ग से तुम्हें अपनी वाणी सुनाई। उस ने पृथ्वी पर तुझे अपनी बड़ी आग दिखाई, और आग में से तू ने उसके वचन सुने। फिर श्लोक 37 पर ध्यान दें, "क्योंकि वह तुम्हारे पूर्वजों से प्रेम रखता था और उनके बाद उनके वंशजों को चुनता था, वह तुम्हें अपनी उपस्थिति और अपनी महान शक्ति के द्वारा मिस्र से बाहर ले आया, ताकि तुम्हारे सामने तुमसे बड़ी और ताकतवर जातियों को निकाल दे और तुम्हें उनके देश में ले आए।" और इसे आज की नाईं तुझे अपना निज भाग होने के लिथे दे दूं। उन्होंने इज़राइल को क्यों चुना? पद 37, "क्योंकि उस ने तुम्हारे पुरखाओं से प्रेम रखा, और उनके पश्चात् उनके वंश को चुन लिया।" इसीलिए वह तुम्हें बाहर लाया। व्यवस्थाविवरण के अध्याय 7 श्लोक 7 को देखें, “प्रभु ने तुम पर स्नेह नहीं किया और तुम्हें इसलिये नहीं चुना क्योंकि तुम अन्य लोगों की तुलना में अधिक थे, क्योंकि तुम सभी लोगों में सबसे कम थे। परन्तु यह इस कारण हुआ कि यहोवा ने तुम से प्रेम रखा, और उस शपथ को पूरी किया जो उस ने पुरखाओं से खाई थी, कि वह तुम को बलवन्त हाथ से निकाल लाया, और दासत्व के देश में से, अर्थात मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ा लिया। इसलिए इज़राइल में ऐसा कुछ भी नहीं है जो ईश्वर की कृपा के योग्य हो। ऐसा इसलिए था क्योंकि वह उनसे प्यार करता था और उसने उनके पिता को चुना था। इब्राहीम ने उन्हें वचन दिया।

व्यवस्थाविवरण 9 श्लोक 4 को देखें और इस प्रकार कहें, "जब तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरे साम्हने से निकाल दे, तब अपने आप से यह न कहना, 'यहोवा ने मुझे मेरे धर्म के कारण इस देश का अधिक्कारनी करने को यहां ले आया है।' नहीं, यह है। इन जातियों की दुष्टता के कारण यहोवा उनको तुम्हारे साम्हने से निकाल देगा। यह आपकी धार्मिकता या आपकी ईमानदारी के कारण नहीं है कि आप भूमि पर कब्ज़ा करने जा रहे थे; परन्तु इन जातियों की दुष्टता के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरे साम्हने से निकाल देगा, जिस से उस ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, तेरे पितरों से जो शपय खाई यी वह पूरी हो। सो समझ लो, यह तुम्हारे धर्म के कारण नहीं है, कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें यह अच्छी भूमि अधिकार में लेने को दे रहा है, क्योंकि तुम हठीले लोग हो।" इसलिए यह इज़राइल की अच्छाई या इज़राइल में निहित किसी चीज़ के कारण नहीं है कि उन्हें भगवान के विशेष लोग होने के लिए चुना गया था, बल्कि इसलिए कि भगवान ने उन पर अपना प्यार स्थापित किया और अब्राहम को वह वादा दिया।

लेकिन फिर हम क्या पाते हैं - वह उन्हें मिस्र से छुड़ाता है और उनके साथ अपनी वाचा स्थापित करने के लिए सिनाई में लाता है लेकिन फिर वह उन्हें अपना कानून देता है। अच्छे कार्यों से मुक्ति नहीं मिलती बल्कि मुक्ति के बाद भगवान चाहते हैं कि उनके लोग पवित्र हों। तो वह अपना कानून देता है. चुनाव सिर्फ एक विशेषाधिकार नहीं है. यह एक जिम्मेदारी भी है. कानून इसी बारे में है। ईश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में इज़राइल पर उन वाचा के दायित्वों के अनुरूप अपना जीवन जीने की एक बड़ी ज़िम्मेदारी थी जो ईश्वर ने उन पर रखी थी। तो ये जंगल में इज़राइल की इस अवधि के बारे में सामान्य टिप्पणियाँ हैं। मैं थोड़ी देर बाद कानून के उस मामले पर वापस आऊंगा।

सी. मिस्र से सिनाई तक, निर्गमन 15:22-18:27

1. आदमी और बटेर

आइए सी पर चलते हैं, "मिस्र से सिनाई तक, निर्गमन 15:22-18:27," और मेरे पास दो उप-बिंदु हैं। मैं इस अनुभाग में बहुत अधिक समय खर्च नहीं करने जा रहा हूं, लेकिन बस कुछ चीजों पर प्रकाश डालूंगा। पहली बात अध्याय 16 में दी गई "मन्ना और बटेर" है। 15 के अंत में, इस्राएली बड़बड़ा रहे हैं क्योंकि उनके पास पानी नहीं है और प्रभु ने पानी उपलब्ध कराया। लेकिन फिर जब

हम अध्याय 16 पर आते हैं, और पद 2 में, “सारे समुदाय ने मूसा और हारून के विरुद्ध शिकायत की। इस्राएलियों ने उनसे कहा, 'भला होता कि हम मिस्र में यहोवा के हाथ से मर जाते। वहां हम मांस के बर्तनों के आसपास बैठे और अपना मनपसंद खाना खाया। परन्तु आप हमें इस रेगिस्तान में इस पूरी सभा को भूखा मार डालने के लिए ले आए।'' इसलिए फिर से आपको शिकायत करने वाली आत्मा मिलती है, बावजूद इसके कि प्रभु ने उनके लिए सब कुछ प्रदान किया था। आयत 4 में प्रभु मूसा से कहते हैं, “मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग से रोटी बरसाऊँगा। लोगों को प्रत्येक दिन जाना है और प्रत्येक के लिए पर्याप्त इकट्ठा करना है और इस तरह मैं उनका परीक्षण करूंगा और देखूंगा कि वे मेरे निर्देशों का पालन करेंगे या नहीं। छठे दिन वे जो कुछ लाएंगे, उसे तैयार करें, और वह अन्य दिनों में जो कुछ वे इकट्ठा करते हैं, उसका दोगुना हो।” इसलिए मूसा और हारून ने सभी इस्राएलियों से कहा, 'सांझ को तुम जान लोगे कि वह यहोवा ही था जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया।' समुद्र। अब खिलाने से ऐसा हुआ, कि तुम जान लो कि यहोवा ही तुम को मिस्र से निकाल लाया। “भोर को तुम यहोवा की महिमा देखोगे, क्योंकि उस ने तुम्हारे विरूद्ध बुड़बुड़ाना सुना है। हम कौन होते हैं कि तुम हमारे विरुद्ध शिकायत करते हो।'' मूसा ने यह भी कहा, 'जब वह तुम्हें सांझ को मांस और भोर को जितनी रोटी चाहो दे देगा, तब तुम जान लोगे कि वह यहोवा है।'' इस्राएल के भरण-पोषण के लिए चमत्कारी तरीके से अपनी शक्ति प्रदान करने का प्रदर्शन करें।

अब मैं अध्याय के शेष भाग पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। सबसे पहले, "मन्ना" नाम पर एक टिप्पणी। इसे "मन्ना" क्यों कहा गया? श्लोक 14 में, आपने पढ़ा, “जब ओस ख़त्म हो गई, तो ज़मीन पर पाले की तरह पतली परतें रेगिस्तान के फर्श पर दिखाई दीं। जब इस्राएलियों ने उसे देखा, तो वे एक दूसरे से कहने लगे, 'यह क्या है?' क्योंकि वे नहीं जानते थे कि यह क्या है।” इसमें कहा गया है कि वहाँ इस्राएलियों ने एक दूसरे से कहा, "यह क्या है?" वहाँ हिब्रू है *मन-हू.* उन्होंने कहा *मन-हू.* क्योंकि वे नहीं जानते थे कि यह क्या है। यदि आप अपने उद्धरण पृष्ठ 19 को देखें, तो पृष्ठ के मध्य में, पुराने नियम पर सी. एफ. कील की टिप्पणी से एक टिप्पणी है। वह कहता है, "*आदमी,* या *मैं* लोकप्रिय वाक्यांशविज्ञान से संबंधित है, और चाल्डी और इथियोपियाई में इसे बरकरार रखा गया है, ताकि इसे निस्संदेह प्रारंभिक सेमेटिक माना जा सके। इस शब्द *आदमी* प्रश्नवाचक है. इसका अनुवाद 'क्या' है। इसलिए इस्राएली बाहर गए और उन्होंने इस अजीब पदार्थ को देखा और कहा,

"यह क्या है" - *मन-हू.* यदि आप पद 31 पर जाएँ, तो आप पढ़ते हैं, “इस्राएल के लोगों ने रोटी को बुलाया *मेरा।*” इसलिए उन्होंने इसे बुलाया *आदमी,* इस अभिव्यक्ति से जब उन्होंने इसे पहली बार देखा, "यह क्या है?" तो उसका अनुवाद *मन-हू* एक प्रकार के लिप्यंतरण में मन्ना बन गया है, लेकिन इसका वास्तव में अर्थ है, "यह क्या है?"

अध्याय की कुछ विशेषताओं के बारे में कुछ अन्य संक्षिप्त टिप्पणियाँ। एक समय में एक दिन का प्रावधान दिया जाता है। यह आम तौर पर रात भर नहीं रहेगा। सातवें दिन को छोड़कर यह खराब हो जाएगा। छठे दिन उन्हें दुगना मिलेगा, इसलिए सातवें दिन के लिए उनके पास पर्याप्त होगा, और फिर वह खराब नहीं होगा। अध्याय 16 श्लोक 16 को देखें और निम्नलिखित, “प्रभु ने यह आज्ञा दी: 'हर एक को उतना ही इकट्ठा करना है जितनी उसे ज़रूरत है। अपने तम्बू में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक ओमेर लो। इस्राएलियों ने वैसा ही किया जैसा उन से कहा गया था; किसी ने बहुत इकट्ठा किया, किसी ने थोड़ा। और जब उन्होंने उसे ओमर से मापा, तो जिस ने अधिक बटोरा उसके पास बहुत अधिक न रहा, और जिस ने थोड़ा बटोरा उसके पास बहुत कम न रहा। प्रत्येक ने उतना ही इकट्ठा किया जितनी उसे आवश्यकता थी। तब मूसा ने उन से कहा, इस में से कोई बिहान तक अपने पास न रखे। परन्तु कितनों ने मूसा की ओर ध्यान न दिया; उन्होंने उसका एक भाग बिहान तक रखा, परन्तु वह कीड़ों से भर गया और दुर्गन्ध आने लगी। इसलिये मूसा उन पर क्रोधित हुआ। हर सुबह हर कोई अपनी ज़रूरत के हिसाब से सामान इकट्ठा करता था, और जब सूरज गर्म हो जाता था, तो वह पिघल जाता था। छठे दिन उन्होंने दुगना अर्थात् दो ओमेर इकट्ठा किया।” श्लोक 23, “कल विश्राम का दिन होगा, प्रभु के लिए पवित्र विश्रामदिन। इसलिए आप जो पकाना चाहते हैं उसे पकाएं और जो उबालना चाहते हैं उसे उबालें। जो कुछ बचा हो उसे सुबह तक बचाकर रखो। इसलिए उन्होंने इसे सुबह तक बचाकर रखा और इससे न तो बदबू आई और न ही इसमें कीड़े पड़े।” तो एक समय में एक दिन का प्रावधान। अब इसके संबंध में, यह दिलचस्प है कि आपके यहां सब्बाथ का संदर्भ है, और यह निर्गमन 20 की दस आज्ञाओं से पहले का है। यह सिनाई से पहले का है। इसलिए सिनाई से पहले यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि वहां सब्बाथ का पालन होता था। वास्तव में, जब आप दस आज्ञाओं पर आते हैं, तो सब्बाथ के बारे में आज्ञा का शब्द "विश्राम को पवित्र रखने के लिए याद रखना" है। इसे इस तरह से लिखा गया है जिससे पता चलता है कि सब्बाथ

के बारे में पहले से कोई ज्ञान था। मुझे ऐसा लगता है कि यह सुझाव देता है कि यह एक सृजन अध्यादेश था। इसलिए सब्त का दिन निर्गमन 20 और माउंट सिनाई में दस आज्ञाओं के प्रकटीकरण से बहुत पहले से चला आ रहा है।

मुझे लगता है कि मन्ना का उपयोग अन्य पाठ पढ़ाने के लिए भी किया जाता था। यदि आप व्यवस्थाविवरण 8:3 को देखें, तो मूसा इस पर विचार करते हुए कहता है, "उसने तुम्हें भूखा करके नम्र किया, और फिर तुम्हें वह मन्ना खिलाया जो न तो तुम और न तुम्हारे पुरखा जानते थे।" क्यों? "तुम्हें यह सिखाने के लिए कि मनुष्य केवल रोटी पर नहीं, बल्कि प्रभु के मुख से निकलने वाले हर शब्द पर जीवित रहता है। इन चालीस वर्षों में आपके कपड़े पुराने नहीं हुए, आपके पैर नहीं सूजे।" भगवान उन्हें स्वयं पर निर्भरता सिखा रहे थे। मनुष्य केवल रोटी पर नहीं बल्कि प्रभु के वचन पर जीवित रहता है। मुझे लगता है कि प्रभु की प्रार्थना में एक संकेत है, "आज हमें हमारी दैनिक रोटी दो।" आपको दिन-ब-दिन ईश्वर पर हमारी निर्भरता के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है और वह उन्हें यही सिखा रहे थे। यीशु मन्ना को स्वयं के एक प्रकार के रूप में संदर्भित करते हैं क्योंकि यीशु जॉन के सुसमाचार में कहते हैं कि वह वह रोटी है जो स्वर्ग से आती है। यदि आप यूहन्ना 6:49 को देखें, तो यीशु कहते हैं, "जीवन की रोटी मैं हूं, तुम्हारे पुरखाओं ने जंगल में मन्ना खाया, तौभी वे मर गए। परन्तु यहाँ वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है, जिसे मनुष्य खाएगा और नहीं मरेगा। मैं वह जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है।" और वह पूरा अध्याय मन्ना को स्वयं मसीह के एक प्रकार के रूप में आकर्षित करता है। आयत 35 में यीशु कहते हैं, "जीवन की रोटी मैं हूँ," और आयत 38 में, "मैं अपनी इच्छा नहीं बल्कि अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से आया हूँ" इत्यादि।

तो यह एक दिलचस्प अध्याय है जिसमें बहुत कुछ चल रहा है। निर्गमन 16 के अंत में प्रभु कहते हैं कि आने वाले दिनों के लिए स्मारक के रूप में मन्ना का एक बर्तन सुरक्षित रखें। निर्गमन 16 श्लोक 32 पर ध्यान दें, "प्रभु ने यह आदेश दिया है: 'एक ओमेर मन्ना लो और इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए रख दो, ताकि वे उस रोटी को देख सकें जो मैंने तुम्हें जंगल में खाने के लिए दी थी।'" श्लोक 35 कहता है, "इस्राएली बसे हुए देश में पहुंचने तक चालीस वर्ष तक मन्ना खाते रहे; उन्होंने कनान की सीमा तक पहुँचने तक मन्ना खाया।" यह दिलचस्प है जब आप इसराइल के जॉर्डन नदी पार करने

और गिलगाल में बसने के बाद यहोशू अध्याय 5 श्लोक 12 में पढ़ते हैं, "जिस दिन उन्होंने भूमि से यह भोजन खाया उसके अगले दिन मन्ना बंद हो गया।" कनान की उपज खाने के बाद इस्राएलियों के पास मन्ना नहीं रहा। इस प्रकार यहोवा ने इस्राएल को उनके मिस्र से निकलने के बाद से लेकर उनके भटकने के पूरे समय तक, जब तक कि वे यरदन नदी को पार करके देश में प्रवेश नहीं कर गए, एक-एक दिन के लिए यह जीविका प्रदान की।

2. रेफिडिम में: निर्गमन 17-18 - अमालेकियों और जेथ्रो की सलाह

एक। अमालेकियों

आइए अपने ब्रेक से पहले एक बार और चलें। 2 है, "रपीदीम में," अध्याय 17 और 18। आपने देखा कि मेरे पास तीन उप-बिंदु हैं: 17:1-7 में फिर से पानी प्रदान किया गया, फिर 17:8-16 में अमालेकियों पर विजय, और फिर जेथ्रो की सलाह अध्याय 18. सबसे पहले, पानी उपलब्ध कराया गया। यह दूसरी बार है जब उन्होंने पानी के बारे में शिकायत की और प्रभु ने फिर से पानी उपलब्ध कराया; यह पहले 7 छंदों में है और मैं इसे छोड़ रहा हूँ। लेकिन मैं दूसरे बिंदु, श्लोक 8-16 पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ, अमालेकियों को इस्राएलियों ने हराया था। आपने श्लोक 8 में पढ़ा, "अमालेकियों ने आकर रपीदीम में इस्राएलियों पर आक्रमण किया।" ये सभी घटनाएँ रेफ़िडिम में घटित हुईं। 17:1 में ध्यान दें, उन्होंने रपीदीम में डेरे डाले जहां पानी नहीं था। परन्तु जब वे वहाँ थे तब अमालेकियों ने आक्रमण कर दिया और मूसा ने यहोशू से कहा कि वह बाहर जाकर अमालेकियों से लड़े। तो यहोशू ने ऐसा किया और आयत 9 के अंत में मूसा अपने हाथों में परमेश्वर की लाठी लेकर पहाड़ी की चोटी पर खड़ा हो गया। “तब यहोशू ने मूसा की आज्ञा के अनुसार अमालेकियों से युद्ध किया, और मूसा, हारून और हूर पहाड़ी की चोटी पर गए। जब तक मूसा ने अपने हाथ उठाये रखा तब तक इस्राएली जीत रहे थे, परन्तु जब भी उसने अपने हाथ नीचे किये, अमालेकियों की जीत हो रही थी। जब मूसा के हाथ थक गए, तो उन्होंने एक पत्थर ले कर उसके नीचे रख दिया और वह उस पर बैठ गया। हारून और हूर ने उसके हाथ एक तरफ और एक तरफ ऊपर उठाये रखे ताकि उसके हाथ सूर्यास्त तक स्थिर रहें। अत: यहोशू ने तलवार से अमालेकियों की सेना पर विजय प्राप्त

की। तब यहोवा ने मूसा से कहा, इस बात को स्मरण रखने योग्य पुस्तक पर लिख ले, और यहोशू भी इसे सुने, क्योंकि मैं आकाश के नीचे से अमालेक का स्मरण पूरी रीति से मिटा डालूंगा। मूसा ने एक वेदी बनाई और उसका नाम रखा, प्रभु मेरा ध्वज है। उन्होंने कहा, 'क्योंकि हाथ प्रभु के सिंहासन तक उठाये गये थे। यहोवा पीढ़ी-दर-पीढ़ी अमालेकियों के विरुद्ध युद्ध करता रहेगा।'' तो यहाँ अमालेकियों द्वारा यह हमला है, जो वैसे, एसाव के वंशज थे, एदोमियों से संबंधित थे। और जब उन्होंने आक्रमण किया, तब यहोशू ने एक सेना बनाई, और इस्राएल को उनके विरूद्ध युद्ध में ले गया।

मुझे लगता है कि सामान्य तौर पर, हम इससे यह कह सकते हैं कि हम यह सीख सकते हैं कि ऐसे समय और परिस्थितियाँ होती हैं जिनमें बुराई के प्रति जबरन प्रतिरोध की आवश्यकता होती है, यहाँ तक कि युद्ध करने की हद तक भी। यह न केवल अनुमेय है, बल्कि कभी-कभी आवश्यक भी होता है। बेशक, यह ईसाई समुदाय में जस्ट वॉर प्रश्न और शांतिवादी प्रश्न पर एक बड़ा मुद्दा उठाता है। मुझे ऐसा लगता है कि ऐसी स्थितियाँ हैं जिनमें इस बारे में लंबी चर्चा किए बिना युद्ध में जाना उचित है। मुझे लगता है कि इस मामले में हमें इसे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखने की जरूरत है। मुझे लगता है कि इससे हमें लड़ाई के महत्व को समझने में मदद मिलती है। मुझे ऐसा लगता है कि इस्राएल पर अमालेकियों का हमला स्त्री के वंश और सर्प के वंश के बीच - परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य के बीच चल रहे संघर्ष का एक और प्रकरण है।

यदि आप इसके बारे में सोचते हैं, तो उनका हमला वास्तव में एक ऐसा हमला है जो यदि सफल होता, तो इस्राएलियों को नष्ट कर देता और इस्राएल को सिनाई तक पहुंचने से रोक देता जहां उन्हें यहोवा के साथ वाचा में प्रवेश करना था और भगवान की वाचा वाले लोग बनना था। अमालेकियों को यह सब समझ में नहीं आया होगा, लेकिन उनका हमला ईश्वर की वाचा के लोगों के रूप में इज़राइल की स्थापना के लिए एक बहुत ही वास्तविक खतरा था। यह अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के मुक्ति उद्देश्यों पर हमला था। मूसा ने विरोध किया और यहोशू बाहर जाकर लड़ता है। जब मूसा व्यवस्थाविवरण 25, श्लोक 17 में इस पर विचार करता है, तो वह कहता है, "याद करो कि जब तुम मिस्र से निकले तो रास्ते में अमालेकियों ने तुम्हारे साथ क्या किया।" वह व्यवस्थाविवरण 25:17 है, “जब तू थका और चूर हो गया, तब वे तेरे मार्ग में तुझ से मिले, और जो पीछे रह गए थे उन

सब को काट डाला; उन्हें परमेश्वर का कोई भय नहीं था। जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस देश में तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम देगा जिसे वह तुम्हें निज भाग करके दे रहा है, तब तुम आकाश के नीचे से अमालेक का स्मरण मिटा देना। तो मूसा ऐसा कहता है और निस्संदेह, यह इस अनुच्छेद की अंतिम पंक्ति है, "प्रभु अमालेकियों के विरुद्ध पीढ़ी-दर-पीढ़ी युद्ध करता रहेगा।" हम पाते हैं कि जब इस्राएल देश में आया और बस गया और राज स्थापित हुआ और पहला राजा शाऊल था; सबसे पहली चीज़ जो यहोवा शाऊल से करने को कहता है वह है अमालेकियों को नष्ट करना। 1 शमूएल 15 में शाऊल बाहर चला जाता है लेकिन ऐसा नहीं करता। उसने कुछ भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और अमालेकियों के राजा अगाग को बचा लिया। इस कारण यहोवा ने शाऊल को राजा होने से अस्वीकार कर दिया। यह कहता है, "क्योंकि तुमने मुझे अस्वीकार कर दिया है, मैं तुम्हें अस्वीकार कर रहा हूं।" यह बहुत गंभीर अपराध है.

इज़राइल के इतिहास में बाद में, फ़ारसी काल में, एस्तेर और उसके चाचा मोर्दकै का दुश्मन हेमान, अगागी नामक एक व्यक्ति था। आपने इसे एस्तेर 3:1 में पढ़ा। बहुत से लोग सोचते हैं कि अगागी हामान अमालेकियों के राजघराने का वंशज था। अमालेकियों का राजा अगाग था। सैमुअल ने उसे मार डाला लेकिन शाऊल ने इनकार कर दिया। तो फिर आपको इज़राइल के इतिहास के उस दौर में इन अमालेकियों के हाथों इज़राइलियों को नष्ट करने और भगवान के मुक्ति उद्देश्यों को विफल करने का प्रयास मिलता है। तो मुझे ऐसा लगता है कि इस छोटे से आख्यान को मुक्तिदायी इतिहास के उस प्रवाह में डालना यहाँ जो कुछ हो रहा है उसके महत्व को देखने में सहायक है।

मूसा द्वारा अपने हाथ ऊपर उठाने की बात और वह क्या करता है, इस बारे में बस एक अंतिम टिप्पणी ताकि इस्राएली जीत रहे थे, जब उसके हाथ नीचे आए तो वे हार गए। निश्चित रूप से मूसा के हाथ उठाने और यहोशू और उसकी सेना के लिए चीजें अच्छी होने के बीच कोई मात्र शारीरिक संबंध नहीं है, बल्कि यह एक प्रतीक है कि मुझे लगता है कि जब हम बुराई का विरोध करने और बुराई से लड़ने के लिए बाहर जाते हैं तो हमें यह याद रखना चाहिए कि जीत और ताकत यहीं से आती है। भगवान और भगवान अकेले. यह हमारी अपनी ताकत नहीं है जो हमें प्रबल होने में सक्षम बनाती है। परन्तु जीत तो यहोवा ही देता है।

बी। जेथ्रो की सलाह

इस खंड से एक अंतिम चीज़ और वह अध्याय 18 है जिसे मैंने "जेथ्रो की सलाह" के रूप में लेबल किया है। यित्रो मूसा का ससुर था और इस्राएल की यात्रा के दौरान, उनका सामना यित्रो से होता है और आप पद 7 में पढ़ते हैं, "मूसा अपने ससुर से मिलने के लिए बाहर गया और उसे प्रणाम किया और उसे चूमा और उसे मिस्र से उनकी मुक्ति के बारे में बताया ।" आपने पद 9 में पढ़ा, "यह सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ कि यहोवा ने इस्राएलियों को मिस्रियों के हाथ से छुड़ाकर उनके लिये क्या-क्या अच्छे काम किए थे।" वह श्लोक 11 में दिलचस्प बयान देता है, "अब मुझे पता चला है कि यहोवा अन्य सभी देवताओं से महान है, क्योंकि उसने यह उन लोगों के लिए किया था जिन्होंने इस्राएल के साथ दुर्व्यवहार किया था।" लेकिन जेथ्रो ने देखा कि मूसा क्या कर रहा था और उसे कुछ सलाह दी। इसीलिए मैं जेथ्रो की सलाह का उल्लेख करता हूं। पद 13 में आप पढ़ते हैं, "अगले दिन मूसा लोगों का न्यायी होने को बैठा, और वे भोर से सांझ तक उसके चारों ओर खड़े रहे। जब उसके ससुर ने देखा कि मूसा लोगों के लिये क्या-क्या कर रहा है, तो उसने कहा, तू लोगों के लिये यह क्या कर रहा है? तू अकेला ही न्यायी क्यों बैठा है, और ये सब लोग भोर से सांझ तक तेरे चारों ओर खड़े रहते हैं? मूसा ने उत्तर दिया, कि लोग परमेश्वर की इच्छा जानने के लिये मेरे पास आते हैं। जब भी उनका कोई विवाद होता है, तो उसे मेरे पास लाया जाता है, और मैं पक्षों के बीच फैसला करता हूं और उन्हें भगवान के आदेशों और कानूनों के बारे में सूचित करता हूं।'' अब मैं आपका ध्यान मूसा द्वारा पहले दिए गए भगवान के आदेशों और कानूनों के संदर्भ की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। सिनाई. मैं बाद में किसी अन्य संबंध में इस पर वापस आना चाहता हूं लेकिन मैं सिर्फ आपका ध्यान उस ओर आकर्षित करना चाहता हूं। मूसा के ससुर ने उत्तर दिया, 'तुम जो कर रहे हो वह अच्छा नहीं है। आप और ये लोग जो आपके पास आते हैं, केवल अपने आप को थका देंगे। काम आपके लिए बहुत भारी है; आप इसे अकेले नहीं संभाल सकते. अब मेरी बात सुनो और मैं तुम्हें कुछ सलाह दूंगा, और भगवान तुम्हारे साथ रहें। आपको ईश्वर के समक्ष लोगों का प्रतिनिधि बनना चाहिए और उनके विवादों को उनके पास लाना चाहिए। उन्हें नियम और कानून सिखाओ।"

यहां सिनाई से पहले के आदेशों और कानूनों का एक और संदर्भ दिया गया है। "उन्हें जीने

का रास्ता बताएं और वे कर्तव्य बताएं जिन्हें उन्हें निभाना है। परन्तु सब लोगों में से योग्य पुरूषों को, अर्थात् परमेश्वर से डरने वाले, भरोसेमंद पुरूषों को, जो बेईमानी के लाभ से घृणा करते हैं, छांटना और उन्हें हजारों, सैकड़ों, पचासों और दसियों पर अधिकारी नियुक्त करना। उन्हें हर समय लोगों के लिए न्यायाधीश के रूप में काम करने को कहें, लेकिन उन्हें हर कठिन मामले को आपके पास लाने को कहें; साधारण मामलों का निर्णय वे स्वयं कर सकते हैं। इससे आपका बोझ हल्का हो जाएगा।" आपने श्लोक 24 में पढ़ा, "मूसा ने अपने ससुर की बात मानी और जो कुछ उसने कहा वह किया।" वे कठिन मामलों को मूसा के पास लाए लेकिन फिर उन्हें इस बड़ी संख्या में लोगों के सभी विवादों का फैसला करने से राहत मिली। वहां कितने लोग थे हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे। लेकिन जिस बात पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं वह बाद में महत्वपूर्ण हो जाती है: ऐसे नियम और कानून थे जिन्हें मूसा सिनाई पर्वत पर कानून देने से पहले इज़राइल को सिखा रहा था और आपने पद 15 में पढ़ा, "मूसा कहते हैं, 'लोग मेरे पास आते हैं परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए।'" इसलिए मूसा सिनाई पर्वत से पहले भी परमेश्वर का प्रवक्ता था। मुझे लगता है कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं और बाद में इस पर वापस आते हैं, इसका महत्व स्पष्ट हो जाता है।

ओलिविया एम. ग्रे द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया